भविष्यदत्त की कथावस्तु संक्षेप में प्रस्तुत करें।

प्राचीन भारतीय कथा साहित्य में प्राकृत कथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसमें भविष्यदत्तकथा भी ऐतिहासिक या पौराणिक सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत ही सुन्दर कथा है हस्तिनापुर नगर में भूपाल नाम का राजा राज्य करता था। उसी नगर में धनपति नाम का एक वनिक निवास करता था। उसकी पत्नी का नाम कमलश्री था जिसके एकलौता पुत्र भविष्यदत्त था, भविष्यदत्त कुछ बड़ा हुआ ही था कि धनपति कमलश्री को घर से निकाल दिया और नागस्वरूपा के साथ विवाह कर लेता है भविष्यदत्त दुःखी मन से मां के साथ ननिहाल में रहने लगता है

नागस्वरूपा कमलश्री से एक पुत्र को जन्म देती है जिसका नाम बन्धुदत्त रखा जाता है बन्धुदत्त जब बड़ा होता है तब अपने मित्रों के सलाह पर धन कमाने हेतु स्वर्णद्वीप जाने की तैयारी करने लगता है भविष्यदत्त भी बन्धुदत्त तथा उसके मित्रों के साथ व्यापार करने हेतु जाने के लिए तैयार हो जाता है। नागस्वरूपा को जब भविष्यदत्त के जाने का पता चला तो उसने बन्धुदत्त से कहा कि जैसे भी हो भइ उपाय करना कि भविष्यदत्त विदेश से तुम्हारे साथ वापिस न लौट सके, अन्यथा वह पिता की आधी सम्पत्ति का मालिक बन जायेगा।

बन्धुदत्त अपने मित्रों तथा बड़ा भाई भविष्यदत्त के साथ जहाज पर सवार होकर मैनाकद्वीप पहुँचा। सभी जहाज से उतरकर द्वीप पर इधर-उधर घूमने लगे। भविष्यदत्त घूमते हुए काफी दूर चला गया, तभी बन्धुदत्त को अपनी माता द्वारा कहा हुआ वचन याद आया, तभी बन्धुदत्त अपने मित्रों के साथ जहाज में सवार होकर भविष्यदत्त को वहीं द्वीप में छोड़कर चल देता है

भविष्यदत्त जब घूमकर द्वीप पर आया तब वहाँ किसी को न देखकर बहुत दुःखी होता है

और इधर उधर भटकने लगता है। वहाँ उसने एक पहाड़ी पर एक पुराना तलगृह देखा। तलघर में धीरे धीरे उतर कर भविष्यदत्त एक सुन्दर नगर देखता है वहाँ स्थित चन्द्रप्रभ भगवान के मन्दिर में पहुँचा। वहाँ से दर्शन कर जब लौटने लगा तभी वहाँ एक दीवाल पर सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई दो पंक्तियाँ उसने पढ़ी, जो उसी को उद्देश्य कर किसी देव ने लिख दी थी। उन पंक्ति का आशय यह था कि इस मंदिर से निकलते ही इससे पाँचवे भवन में जाना है जहाँ एक सुन्दर युवती तुम्हारा स्वागत करेगी। भविष्यदत्त पंक्ति के अनुसार पहुँचा वहाँ भविष्यरूपा नाम की युवती कन्या ने उसका स्वागत किया। वहाँ के क्षेत्रपाल देवों ने उन दोनों का विवाह कराकर भविष्यदत्त को नगर का राजा बना दिया।

दोनों सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे उसी समय भविष्यदत्त को माता की याद आ गई। दोनो सलाह कर माँ के पास आने की तैयारी करने लगते है दोनों बहुत से सामानों के साथ समुद्र तट पर पहुँचते है उसी समय बन्धुदत्त विदेश यात्रा से लौटता है वहीं समुद्र तट पर दोनों की भेंट हो जाती है बन्धुदत्त भविष्यरूपा के सौन्दर्य को देखकर मोहित हो जाता है और भविष्यदत्त के अपार सम्पत्ति को हड़पने के ख्याल से भविष्यदत्त को पुनः धोखा देकर ~~भविष्यरूपा~~ के भविष्यदत्त को समुद्रतट पर ही छोड़कर भविष्यरूपा तथा भविष्यदत्त के सम्पत्ति को लेकर चल देता है भविष्यरूपा बहुत दुःखी होती है और जल देवी की आराधना करती है और अपने शील की रक्षा करने में सामर्थ हो जाती है

इधर भविष्यदत्त की माता दुखी होकर आश्रम में रहने लगती है सुव्रता साध्वी कमलश्री को धैर्य बंधाते हुए श्रीपंचमी के व्रत करने की सलाह दी।

बन्धुदत्त पुनः भविष्यदत्त को छोड़कर अपने साथियों तथा भविष्यदत्ता के साथ हस्तिनापुर पहुँचता है कन्यारत्न तथा उसकी सम्पत्ति को देखकर राजा प्रसन्न होता है। बन्धुदत्त शुभ मुहूर्त में उस कन्या के साथ अपने विवाह की घोषणा कर देता है।

उधर भविष्यदत्त यक्षराज की सहायता से विशेष विमान द्वारा हस्तिनापुर पहुँच जाता है। भविष्यदत्त राजा से मिलकर सारी घटना को विस्तृत रूप से बताता है। राजा भूपाल क्रोधित होकर बन्धुदत्त की तथा धनपति की समस्त सम्पत्ति छीनकर उन्हें कारागार में डाल देता है तथा भविष्यदत्ता के साथ भविष्यदत्त को शादी करने की स्वीकृति दे देता है। इतना ही नहीं राजा भूपाल अपना आधा राज्य सहित अपनी तारा नाम की कन्या को भी भविष्यदत्त को दे देता है। उसके बाद भविष्यदत्त सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगता है।